फरीदाबाद

मजदूर समाचार

मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

काम कम ।
बातें ज्यादा।।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001

नई सीरीज नम्बर 139 — जनवरी 2000

माहौल ऐसा ही है इसलिये (5)

मजदूरी करना अथाह पीड़ा लिये है। इसलिये हर मजदूर अपने-अपने ढँग से अपने गुस्से को अभिव्यक्त करती है, विभिन्न तरीकों से तकलीफों का प्रतिरोध करता है। यह सब सामान्य है।

प्रत्येक स्थान पर और हर पल मजदूरों के विरोध होते हैं इसलिये मैनेजमेन्टों के निरीक्षण-नियन्त्रण-दमन तन्त्र की पकड़ में कभी कोई तो कभी कोई मजदूर आ ही जाती है। ऐसे में अपने सहकर्मी के बचाव में हम सक्रिय होते हैं। चूँकि अकेले-दुकेले में उठाये जाते मजदूरों के कदम आमतौर पर धूम-धड़ाके वाले नहीं होते इसलिये पाँच-सात मजदूर अपने सहकर्मी के पक्ष में सुपरवाइजर-मैनेजर को "समझाते" हैं तब साहब लोग अपना भला मामले को रफा-दफा करने में ही देखते हैं। यह भी आम बात है।

प्रत्येक मजदूर द्वारा हर रोज स्वयं उठाये जाते विरोध के कदम और एक-दूसरे के बचाव के लिये मजदूरों के बीच सतरंगी तालमेल ही वह ढाल है जो हर फैक्ट्री में, हर दफ्तर में मैनेजमेन्टों को रोकती है।

लेकिन .... लेकिन प्रत्येक कार्य स्थल, प्रत्येक कम्पनी मंडी के ताने-बांने में उछलती/गिरती इकाई मात्र है।

मण्डी-मुद्रा का जाल

कम्पनी में कोई मैनेजमेन्ट कितनी ही शक्तिशाली क्यों न नजर आती हो, मण्डी-मुद्रा के विश्व सागर में हर कम्पनी कागज की नाव और हर मैनेजमेन्ट उसके खेवैया के समान है। शक्तिशाली सरकारें भी असहाय हैं – कम्प्युटरों व सैटेलाइटों से जुड़े सट्टा बाजारों ने सरकारों की लाचारी को इस हद तक ला दिया है कि मण्डी-मुद्रा की भँवर के निर्देश अनुसार सरकारें तुरत-फुरत नियमों-कानूनों में फेर-बदल करती हैं।

और, दुनियाँ-भर में लाखों फैक्ट्रियाँ बन्द हो रही हैं, कम्पनियाँ दिवालिया हो रही हैं। हर देश की सरकार अधिकाधिक कर्ज में डूबती जा रही है, अमरीका सरकार आज विश्व में सबसे ज्यादा कर्जदार सरकार है .....

दलीलें अनेक दी जाती हैं पर उनका सार है: हाथ बचाने के लिये उँगली कटवाओ, धड़ बचाने के लिये हाथ कटवाओ। यह है वर्तमान। माहौल ऐसा ही है।

कानूनी-गैरकानूनी की जुगलबन्दी

कानून अनुसार शोषण और कानून से परे शोषण संग-संग चलते हैं। कम्पनी/सरकार की डगमगाहट के अनुपात में इनमें फेर-बदल होते हैं।

37-40 दिन काम करवाने के बाद 30 दिन का वेतन, सरकारी रेट से तनखा, ई.एस.आई, भविष्य निधि, हाजरी कार्ड, स्थाई काम के लिये परमानेन्ट मजदूर रखना कानून अनुसार शोषण है, 5 हजार में 5 लाख का काम करवाना है। डेढ-दो-तीन महीने बाद तनखा देना, सरकारी रेट नहीं देना, फण्ड जमा नहीं करवाना, बोनस नहीं देना, रिटायर होने पर ग्रेच्युटी-सर्विस नहीं देना, स्थाई काम के लिये कैजुअल वरकर रखना अथवा ठेकेदार के वरकरों से काम करवाना, फैक्ट्री के बाहर वर्कशॉपों में काम करवाना, अप्रेन्टिसों से उत्पादन लेना आदि-आदि कानून से परे शोषण है जो कि एक हजार में पाँच लाख का काम करवाना है। जैसे-जैसे कम्पनियों की लड़खड़ाहट बढती जा रही है वैसे-वैसे कानून से परे शोषण फैलता जा रहा है। "हाथ बचाना है तो उँगली कटवाओ" कानूनी और गैरकानूनी, दोनों प्रकार के शोषण को बढाने वालों का ब्रह्मसूत्र है।

कत्ल हो और बिन कफन रहो

वर्तमान के स्तम्भों, दल्लों, चमचों, भाण्डों के तर्क-बाण यह हैं :

– क्या बिना तनखा 20 तारीख हो गई ? दो महीने हो गये ? दिक्कत तो होगी पर कम्पनी के पास है, किसी दो टके वाले के यहाँ नहीं ! जमा ही समझो। देर हो जाती है, पैसे कहीं नहीं जायेंगे ....

–क्या फण्ड की रसीद नहीं मिली है ? कम्पनी ने पैसे जमा ही नहीं करवाये क्या ? सरकार का काम है और सरकार के हाथ बहुत लम्बे होते हैं। भविष्य निधि वाले खुद ही कम्पनी से पैसे ले लेंगे ....

– क्या सरकारी रेट नहीं देते ? तनखा में 800-1000 ही देते हैं क्या ? न से तो यह भी अच्छे। जो मिल जाये उसी में काम करो ....

– क्या वर्क लोड बहुत बढा दिया ? चीं-चाँ मत करो, कैजुअलों और ठेकेदारों के वरकरों से तो हजार गुणा ठीक हो। बारह घन्टे के बोलबाले में 8 घन्टे की ड्युटी कर रहे हो ....

– क्या छँटनी के लिये मैनेजमेन्ट ने वी.आर. एस. लगाई है ? लोग राजी से चले जायें तो अच्छा है ! कम्पनी बन्द नहीं होनी चाहिये। सब की नौकरी न सही, कुछ की तो रहेगी ...

– क्या रिटायर होने वालों की जगह नई भर्ती नहीं कर रहे ? स्थाई कार्य के लिये भी कैजुअलों को रख रहे हैं क्या ? अपनी चिन्ता करो। जितने दिन कट जायें उतने पर ही शुक्र करो ....

– क्या कम्पनी में ठेकेदारी बढा रहे हैं ? काम बाहर वर्कशॉपों में भेज रहे हैं क्या ? सस्ते में कौन नहीं करवाता ? तुम दस हजार में पड़ते हो जबकि ऐसे हजार-आठ सौ में हो जाता है ...

– क्या कम्पनी की सम्पत्ति बेच रहे हैं ? तुम्हें क्या ? जो चाहें वे अपनी चीज बेच सकते हैं ....

– क्या ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं ? तीन महीने बाद देते हैं क्या ? बोनस दो साल का बकाया हो गया क्या ? दे तो रहे हैं, इनकार तो नहीं करते ! सब्र करना सीखो....

– क्या 8 घन्टे के 1200 और रोज 12 घन्टे करवाते हैं ? अच्छे हो, महीने के 1800 बन जाते हैं! छुट्टी-वुट्टी में क्या रखा है ? असली बात तो दो पैसे कमाना है। सोलह घन्टे भी करना पड़ता है ? शरीर को जितना घिसाओ उतना अच्छा! तरक्की का मन्त्र है : चमड़ी जाये और दमड़ी आये। जब तक कूट सकते हो, कूटो पैसे ....

– क्या नये-नये को पावर प्रेस पर लगा दिया ? रात में हाथ कट गया क्या ? काफी खर्च कर साहब ने ई.एस.आई. बनवा दी, अब जिन्दगी-भर 250 रुपये पेन्शन मिलेगी। और क्या लोगे ? कम्पनी ही तुम्हें दे दें ....

कम नुकसान से बात बन जाये तो किसको एतराज हो सकता है ? देर से ही सही पर वेतन मिल ही जायेगा तो इस पर बावेला मचाने में क्या तुक है ? दो-चार तनखा मारी जायें पर नौकरी बनी रहे तो इसे कौन नहीं मानेगी ? अगर उँगली कटवाने से हाथ बच जाये तो इसके लिये.

(बाकी पेज चार पर)

पब्लिक सैक्टर

इंडियन ऑयल आर. एण्ड डी सेन्टर मजदूर : "आज 17 दिसम्बर तक ठेकेदार ने हम 250-300 वरकरों को अक्टूबर व नवम्बर के वेतन नहीं दिये हैं। अपनी तनखाओं के लिये हम ने 9 दिसम्बर को सुबह काम बन्द कर दिया था तब ठेकेदार ने शाम को तनखा देने की कह कर 12 बजे काम शुरू करवाया। लेकिन शाम को तनखा देने की बजाय ठेकेदार बोला कि तुमने काम छोड़ने का पाप किया है, इसकी तुम्हें सजा मिलेगी। गेट पर सी.आई.एस.एफ. के सैनिक पहरा देते हैं – 5 बजे ड्युटी खत्म होने के बाद ठेकेदार ने हम से एक घन्टे कस्सी चलवाई। अगले दिन, 10 दिसम्बर को हम में से 15 को नौकरी से निकाल दिया पर उन्हें भी तनखायें नहीं दी। अपने पैसे लेने कुछ वरकर कार्ड पर दिये ठेकेदार के पते पर गये तो वहाँ उसके वकील भाई की पत्नी ने कहा कि ठेकेदार यहाँ नहीं रहता और हमें परेशान मत करो। कुछ वरकर इंडियन ऑयल आर एण्ड डी सेन्टर के डायरेक्टर से मिलने गये तो वहाँ रिसेप्शनिस्ट बोली कि दो टके के टुच्चे तुम डायरेक्टर से नहीं मिल सकते। डायरेक्टर के बाद दूसरे नम्बर के अफसर से मिलने गये तो उनका सचिव बोला कि साहब के पास जाओगे तो तुम्हारी नौकरी तो जायेगी ही, थप्पड़ भी खाओगे। कैन्टीन में परमानेन्टों को 50 पैसे में चाय और ठेकेदार के वरकरों को 2 रुपये में तथा खाना परमानेन्टों को 4 रुपये में और हमें 10 रुपये में देते हैं।"

अनुभव

कैजुअल वरकर : "घाटा हुआ है कह कर **एस्कोर्ट्स यामाहा (राजदूत)** मैनेजमेन्ट 1500 कैजुअलों को 8.33 प्रतिशत बोनस देने पर अड़ी है। एक दिन फैक्ट्री गेट पर एकत्र हो कर इस पर हम ने एतराज किया तो मैनेजमेन्ट ने पुलिस बुला ली। यूनियन लीडर हमारी बातों को अनसुनी कर रहे हैं। काम बराबर का करवाते हैं और तनखा परमानेन्टों की एक चौथाई देते हैं तथा 6 महीने बाद कैजुअलों को निकाल भी देते हैं। ऐसे में एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट में रत्ती-भर भी इन्सानियत है तो हम कैजुअलों को भी परमानेन्ट मजदूरों की ही तरह 11.67 एक्सग्रेसिया दे कर 20 प्रतिशत बोनस जैसा दे।"

फ्रिक इण्डिया मजदूर : "ज्यादा शोषण करने के लिये कम्पनियाँ एक-दूसरे की नकल करती हैं लेकिन किसी कम्पनी में मजदूर कुछ ले रहे हों तो उसकी नकल अन्य कम्पनियाँ नहीं करती। फ्रिक इण्डिया में कार्यरत मजदूर की मृत्यु पर हर वरकर 50 रुपये सहयोग में देता है। कुछ कम्पनियों में ऐसे में मजदूरों द्वारा एकत्र राशि के बराबर ही कम्पनी भी देती है लेकिन फ्रिक इण्डिया मैनेजमेन्ट इसकी नकल नहीं करती, कार्यरत मजदूर के मरने पर यह मैनेजमेन्ट एक धेला भी नहीं देती।"

सोचने की बातें

हैदराबाद इन्डस्ट्रीज मजदूर : "एस्बेसटोस के प्रयोग के कारण मजदूरों के कई बीमारियाँ हैं पर इस बारे में चर्चायें नहीं होती। बातें होती हैं कैन्टीन बन्द कर उसके बदले पैसों की। रिटायर होने वालों की जगह भर्ती नहीं करते और ठेकेदारी बढा रहे हैं पर इस पर चर्चाओं की बजाय रिटायर होने वालों को दो पैसे के बारे में बातें होती हैं।"

वी एक्स एल वरकर : "कारगिल के नाम पर लीडरों के सहयोग से मैनेजमेन्ट ने मजदूरों की एक दिन की दिहाड़ी काट ली पर मैनेजरों ने अपनी दिहाड़ी नहीं कटवाई। कारगिल में बमों की जरूरत के नाम पर लीडरों व मैनेजमेन्ट ने हमारा वर्क लोड बढा दिया – 120 की जगह 125 पीस कर दिया। कारगिल युद्ध तो समाप्त हो गया पर हमारे ऊपर अतिरिक्त 5 पीस का बोझा कहने पर भी मैनेजमेन्ट ने कम नहीं किया है। बल्कि, अधिक गोलाबारूद के लिए मैनेजमेन्ट वर्क लोड बढा कर 130 पीस माँग रही है। लड़ाई शुरू होने के बाद से हर रोज 4 घन्टे ओवर टाइम लगाते हैं और इन 4 घन्टों में 65 पीस का प्रोडक्शन थोपा हुआ है।"

थॉमसन प्रेस मजदूर : "15-20 साल से काम कर रहे मजदूरों को मैनेजमेन्ट कह रही है कि तुम पढे-लिखे नहीं हो, तुम ट्रेन्ड नहीं हो, तुम कम्प्युट्राइज्ड मशीनें चलाने लायक नहीं हो इसलिये रिजाइन दो। इस्तीफे लिखवाने के लिये मैनेजमेन्ट मद्रास ट्रान्सफर की धमकियाँ देती है। कुछ दिन पहले 15-20 को इस प्रकार रिजाइन लिखने को मजबूर किया और 8-10 पर अब दबाव डाल रही है।"

अमर नाथ भास्कर रिफ्रेक्ट्रीज वरकर : "हम 500 थे, अब 50-60 रह गये हैं। बिजली कनेक्शन बरसों से कटा है, जनरेटर से काम होता है। फैक्ट्री का आधा हिस्सा बेच दिया है। नवम्बर का वेतन आज 22 दिसम्बर तक नहीं दिया है, डेढ साल का फण्ड भी जमा नहीं करवाया है। जिन्हें निकालना होता है उन्हें परेशान करके इस्तीफे लिखवा लेते हैं और किस्तों में हिसाब देते हैं। 20-25 साल पुराने मजदूरों को भी महीने के 1800 रुपये देते हैं और इनमें से ही फण्ड व ई.एस.आई. काट लेते हैं।"

व्हर्लपूल मजदूर : "पहले बड़ी कम्पनियों में काम करने वाले सोचते थे कि अपने बच्चों को भी वहीं लगवा देंगे। लेकिन अब जिस ढँग से बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ मजदूरों को निकाल रही हैं उसे देख यहाँ अपनी नौकरी का ही भरोसा नहीं रहा। वी आर एस क्या हुआ कि मजदूरों की जिन्दगी अधर में लटक गई। कम्पनियों में इन्सानियत नाम की चीज नहीं है। अभी ड्युटी कर रहा हूँ पर पता नहीं कितने दिन रहने देंगे। और रह ही गया तो पता नहीं किस कदर निचोड़ेंगे। जिन लोगों ने वी आर एस ली है उनकी दुर्गत देख कर बहुत तकलीफ होती है। यह बड़ी कम्पनियाँ ही बन्द हो जायें तो अच्छा है।"

हाल-चाल यह है

केसेलेक वरकर : "70 परमानेन्ट हैं और 50 कैजुअल। परमानेन्टों की भी तनखायें कम हैं – 20 साल से ऊपर सर्विस वालों को तीन हजार भी नहीं देते। वेतन बिना 7 तारीख पार होते ही हम ने दो-तीन बार कदम उठाये, अब तनखा में देर नहीं की जाती। इन 15 वर्षों में एग्रीमेन्टों के जरिये वर्क लोड तीन सौ प्रतिशत बढा दिया गया है। चार-पाँच किस्म के रसायन उत्पादन में प्रयोग होते हैं, 4-5 मजदूरों की उँगलियाँ भी कट गई हैं। ओवर टाइम काम की पेमेन्ट सिंगल रेट से करते हैं।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : "पहले तो एग्रीमेन्ट में वर्क लोड में भारी वृद्धि की और अब प्रोडक्शन पूरा नहीं किया कह कर मैनेजमेन्ट ने रेलवे डिविजन में नवम्बर के वेतन में से 500 से 1500 रुपये तक काट लिये हैं।

"स्टाफ वाले वी आर एस फार्म नहीं भर रहे। उन्हें नौकरी से निकालने के लिये मैनेजमेन्ट ट्रान्सफर लैटर दे रही है। लेकिन इसमें भी मैनेजमेन्ट को सिरदर्द है – जाने का व सामान ढोने का किराया, नई जगह मकान किराये पर लेने के लिये रकम स्टाफ वाले माँगते हैं।"

बाटा वरकर : "तालाबन्दी के बाद से लाइनों की रफ्तार बढा कर मैनेजमेन्ट ने वर्क लोड बढा दिया है और संग-संग क्वालिटी के लिये चिल्ल-पों कर रही है। कुछ जॉब बाहर भी भेज दी हैं। धुन्ध की वजह से बस और ट्रेन लेट हुई तो सजा मैनेजमेन्ट ने पलवल साइड से आते मजदूरों को दी – आधी दिहाड़ी काट ली। इधर वर्ष की 7 कैजुअल छुट्टी और 7 सिक लीव को 2-2 करने का शगूफा मैनेजमेन्ट ने छोड़ा है।"

हिन्दुस्तान वायर मजदूर : "वायर डिविजन में 450 में से अब 125 ही रह गये हैं। परेशान कर निकालने में लगी है मैनेजमेन्ट – 50-60 चले भी गये हैं। कइयों को वाल्व डिविजन में ट्रान्सफर कर दिया है।"

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

★ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये।

★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सडक पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार ही छाप पाते हैं और 5000 प्रतियाँ ही फ्री बाँट पाते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें।

शोषण के लिये क़ानून और कानून से परे शोषण

कैजुअल वरकर : " इस समय **कम्पोनेन्ट फोरजिंग** में काम करता हूँ। इन कम्पनियों को किसी का डर नहीं है क्या ? न किसी रजिस्टर पर दस्तखत और न ई.एस. आई. व फण्ड।"

ठेकेदार के मजदूर : " हम 50 के करीब **हिन्दुस्तान वैक्यूम ग्लास** में काम करते हैं। हर रोज 6 घन्टे लगातार काम करना पड़ता है — कोई टी ब्रेक नहीं, कोई लन्च नहीं। साप्ताहिक छुट्टी नहीं है। हैल्पर को 35 रुपये और कारीगर को 40 रुपये रोज की दिहाड़ी देते हैं।"

वर्कशॉप वरकर : " इस समय **क्वालिटी इंजिनियरिंग** में काम करता हूँ। यहाँ 18 मजदूर हैं पर किसी को ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिया है। फण्ड भी नहीं है। सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं देते। वर्कशॉप वालों के रूप में यह जो छोटे-छोटे पिल्ले हैं यह बहुत भौंकते हैं।"

फरीदाबाद फैब्रिकेटर मजदूर : " 12 घन्टे काम करना पड़ता है — 10 घन्टे की ड्युटी और 2 घन्टे ओवर टाइम। ई.एस.आई. काटते हैं पर कार्ड नहीं देते — एक वरकर का हाथ कट गया तो उसे दस हजार दे कर निकाल दिया। हफ्ते

फैब्रिकेशन में 12 घन्टे की ड्युटी लेते हैं। बीमार होने पर अपने आप छुट्टी कर लो तो कहते हैं कि कहीं और काम देख लो। ड्युटी नहीं पहुँच पाने का कारण बताओ तो कहते हैं कि हम तुम्हारे जैसों को ही ठीक करते आये हैं। रोज 12 घन्टे ड्युटी करने पर महीने में किसी को 600 तो किसी को 800 रुपये तनखा देते हैं।"

आटोपिन मजदूर : " मैनेजमेन्ट ने अक्टूबर का वेतन 1-2 दिसम्बर को जा कर दिया पर तब भी वेतन के आधे पैसे ही दिये।"

कैजुअल वरकर : " सितम्बर अन्त में 6 महीने पूरे होने पर प्लाट 265 से **लखानी शूज** मैनेजमेन्ट ने हमें निकाल दिया लेकिन आज 14 दिसम्बर तक हमें सितम्बर का वेतन नहीं दिया है। हमने जो ओवर टाइम काम किया था उसके पैसे भी मैनेजमेन्ट ने नहीं दिये हैं। कई बार हम अपने पैसे माँगने फैक्ट्री गये हैं पर कल-परसों की कह कर हर बार मैनेजमेन्ट टाल देती है।"

वीनस मैटल मजदूर : " 5-7 को छोड़ कर किसी का भी न तो फण्ड है, न ई.एस.आई. है और न ही बोनस देते हैं।"

है और न फण्ड। निकालते रहते हैं।"

सुपर ऑयल सील मजदूर : " मैनेजमेन्ट ने अक्टूबर तथा नवम्बर की तनखायें आज 14 दिसम्बर तक नहीं दी हैं। वेतन माँगने पर मैनेजमेन्ट ने धीमा काम करते हो का आरोप लगा कर 7 मजदूरों को निलम्बित कर दिया है।"

झालानी टूल्स मजदूर : " मार्च 96 से 20 नवम्बर 97 की 20 महीने 20 दिन की तनखा तो मैनेजमेन्ट ने हमें दी ही नहीं है, इधर भारी कटौती के बाद जो तनखा दी जाती है वह भी दो महीनों की और बकाया कर दी है — अक्टूबर 99 का वेतन हमें 30 दिसम्बर को जा कर देना शुरू किया। डराने-धमकाने के लिये मैनेजमेन्ट का लठैत गिरोह बना कर हाकियाँ ले कर घूमते हैं।"

कैजुअल वरकर : " यूनियन से एग्रीमेन्ट की आड़ में **एस्कोर्ट्स** मैनेजमेन्ट ने कैजुअलों पर 70 प्रतिशत वर्क लोड बढा दिया पर पैसा एक नहीं बढाया। इधर मँहगाई कम हुई के सरकारी खटराग की आड़ में एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट ने कैजुअलों की दिहाड़ी में से 2 रुपये प्रतिदिन घटा दिये हैं।"

मैनेजमेन्टों की लगाम

हर कार्यस्थल पर हजारों तार होते हैं ; हजारों नट-बोल्ट होते हैं ; नालियाँ-सीवर होते हैं ; कई-कई ऑपरेशन होते हैं ; रात-दिन को लपेट शिफ्टें होती हैं। इसलिये मैनेजमेन्टों को रोकने-डाटने के लिये मजदूरों के हाथों में कारगर लगाम हैं : ★ पाँच साल दौड़ने वाली मशीनें छह महीनों में टें बोल दें ; ★ कच्चा माल-तेल-बिजली उत्पादन के लिये आवश्यक मात्रा से डेढी-दुगनी इस्तेमाल हो ; ★ ऑपरेशन उल्टे-पल्टे हो कर क्वालिटी को गँगा नहा दें ; ★ बिजली कभी कड़के, कभी दमके, कभी आँख-मिचौनी करने मक्का-मदीना चली जाये ; ★ अरजेन्ट मचा रखी हो तब ऐसे ब्रेक डाउन हों कि साहबों को हृदय रोग हो जायें।

बिना किसी प्रकार की झिझक के, शान्त मन से, ठन्डे दिमाग से सोच-विचार कर कदम उठाने चाहियें।

में कोई छुट्टी नहीं देते — हाँ, रविवार को 10 की बजाय 8 घन्टे ड्युटी करवाते हैं। महीने में तीसों दिन काम करने पर 1900 रुपये वेतन। ओवर टाइम के पैसे 3 महीने बाद सिंगल रेट से देते हैं।"

कैजुअल वरकर : " दो साल से काम कर रहे कैजुअलों को **ओरियन्ट स्टील** में ई.एस. आई. कार्ड नहीं, फण्ड नहीं। पुराने कैजुअलों से 1642 पर हस्ताक्षर करवाते हैं और इनमें से फण्ड व ई.एस.आई. के पैसे काटते हैं। रजिस्टर में टिकट पर दस्तखत करवाते हैं पर राशि पेन्सिल से लिखी होती है। एक सुपरवाइजर कहता है तेल डालो, दूसरा कहता है वैल्डिंग करो और तीसरा कहता है कि यह लोड करो। फिर तीनों काम नहीं करने का आरोप लगाते हैं।"

इम्पीरियल आटो मजदूर : " सैक्टर-25 के प्लाट 94 में हम 400 के करीब वरकर हैं। हम से 1350 रुपये तनखा में काम करवा रहे हैं और इन 1350 में से भी 4 इतवार के पैसे काट लेते हैं। मैनेजमेन्ट ने सब मजदूरों को हैल्पर दिखाया है और सुपरवाइजरों को आपरेटर। हमें कोई बोनस नहीं देते, कोई छुट्टी नहीं देते और गुण्डों व पुलिस की मदद से शोषण करते हैं।"

वर्कशॉप वरकर : " लडकों से **गाँधी**

अतुल ग्लास वरकर : " मैनेजमेन्ट वेतन समय पर नहीं देती और मजदूर वेतन माँगते हैं तब पुलिस की धमकियाँ दी जाती हैं। अक्टूबर की तनखा 30 नवम्बर तक दी गई और नवम्बर के पैसे आज 16 दिसम्बर तक नहीं दिये हैं।"

नूकेम मजदूर : " मैनेजमेन्ट ने एन एम टी एल में सितम्बर का वेतन भी 16 दिसम्बर तक नहीं दिया है और आर एण्ड डी का अक्टूबर का। इस पर एन एम टी एल में हम ने यूनियन भँग कर दी है। अब वरकर स्वयं कदम उठा रहे हैं।"

कैजुअल वरकर : " कई वर्ष लगातार काम करते वरकर **जगसन पाल फार्मास्युटिकल्स** में कैजुअल हैं। न ई.एस.आई. है और न फण्ड। कोई छुट्टी भी नहीं देते।"

ए. सी. आटो मजदूर : " अप्रेल माह के ओवर टाइम काम के पैसे मैनेजमेन्ट ने अभी तक नहीं दिये हैं। वेतन में 800-1000-1200 रुपये महीना ही देते हैं और नवम्बर का वेतन आज 17 दिसम्बर तक नहीं दिया है।"

पूनम चप्पल वरकर : " हम 170 हैं। काम सिर पर चढ कर करवाते हैं पर ज्यादातर को 1200 रुपये वेतन ही देते हैं — कुछ को 1400-1600-2000 भी देते हैं। न ई.एस.आई.

जयको स्टील फासनर मजदूर : " फैक्ट्री में हम परमानेन्ट 113 हैं और ठेकेदारों के 160 वरकर हैं। प्रोविडेन्ट फण्ड के लिये कम्पनी हमारे वेतन में से 12 प्रतिशत काटती है पर ठेकेदार 20 प्रतिशत काटते हैं। एक ठेकेदार तो वरकरों को वेतन ही 1000 रुपये महीना देता है। मैनेजमेन्ट ठेकेदारी को और बढाना चाहती है।"

कैजुअल वरकर : " दो-ढाई साल से हम कैजुअलों के तौर पर **विंग्स आटोमोबाइल्स** में काम कर रहे हैं। हमें 1300 रुपये महीना वेतन देते थे और कुछ समय से 1500 देना शुरू किया। न ई. एस.आई. थी और न फण्ड। छुट्टी के दिन 28 नवम्बर को हम में से कुछ को ई.एस.आई व प्रोविडेन्ट फण्ड के फार्म भरने को फैक्ट्री बुलाया। फार्मो पर दस्तखत करवाने के बाद कम्पनी की डायरेक्टर बोली कि अब तुम ठेकेदार के मजदूर हो और आगे से मैनेजमेन्ट का तुम से कोई लेना-देना नहीं है।"

विक्टोरा टूल्स मजदूर : " कुछ को छोड़ कर बाकी का न फण्ड है, न ई.एस.आई. और न ही बोनस। वेतन 1300 रुपये महीना देते हैं।"

अमेटीप मशीन टूल्स वरकर : " मजदूरों को कानूनी अधिकारों की जानकारी दी जाये ...."

माहौल ऐसा ही है ...(पेज एक का शेष)

राजी कौन नहीं होगा ? अपने-अपने में यह दलीलें इतनी प्रभावशाली हैं कि तकलीफों के बावजूद इन्हें स्वीकार किया जाना आम बात है। लेकिन ... लेकिन कम नुकसान को झेल लो का यह सिलसिला हमें ऐसे भँवर में फँसा देता है कि उँगली के बाद हमारा हाथ कटता है और फिर धड़।

वर्तमान के स्तम्भों , दल्लों , चमचों , भाण्डों के तर्क- बाणों के परिणाम हैं :

1. बड़ी सँख्या में बन्द हुई , बन्द हो रही कम्पनियों के परमानेन्ट मजदूरों का कई- कई महीनों का बकाया वेतन , बरसों का जमा नहीं किया गया प्रोविडेन्ट फण्ड, डूबते बीसियों वर्ष की सर्विस- ग्रेच्युटी के पैसे ...... कँकाल बने इन मजदूरों का मुँह चिढाते हैं।

2. कैजुअल और ठेकेदारी प्रथाओं का प्रसार नई पीढी को 28 वर्ष की आयु तक में ही बूढे- बुढिया बना रहा है । यह है वर्तमान । माहौल ऐसा ही है। इसलिये .....

अपनी-अपनी डफली, तालमेल के राग

कम नुकसान अर्थात पहले हमारी उँगली, फिर पहुँचा, फिर हाथ और फिर हमारी धड़ काटने वाले वर्तमान के सुदर्शन चक्र की काट के बारे में मजदूरों के बीच बड़े पैमाने पर सोच- विचार जरुरी है । इस सन्दर्भ में कुछ विचारणीय बातें हमें यह लगती हैं :

— जहाँ 1000 से कम मजदूर हैं वहाँ बिना तनखा 7 तारीख होते ही हर मजदूर को अपनी पीड़ा- आक्रोश को पी कर अपने कष्ट बढ़ाने की बजाय अपने- अपने ढँग से ऐसे अनेक कदम उठाने चाहियें कि मैनेजमेन्ट का सिरदर्द सातवें आसमान को छूने लगे और नेता जोकर बन जायें । छह महीने पर्ची का इन्तजार करने की बजाय हर महीने किसी न किसी मजदूर द्वारा फण्ड दफ्तर में पता करना और मैनेजमेन्ट द्वारा पैसे नहीं जमा करवाने पर हर मजदूर द्वारा अपने- अपने पैसों के लिये अनेक साहबों को इतनी शिकायतें करना कि प्रोविडेन्ट फण्ड वालों को थोड़ी राशि रिश्वत में लेने में बड़ा लफड़ा नजर आये और मैनेजमेन्ट को थोड़ी रांहत के लिये मोंटी रिश्वत देना दीखे। कम्पनी की सम्पत्ति बेचने की खबर रखना और अपनी- अपनी सर्विस- ग्रेच्युटी के पैसों की गारन्टी के लिये इस कदर चिल्ल- पों मचाना कि एम डी- मैनेजर- लीडर- सरकारी अफसर- बैंक अधिकारी को कट- कमीशन फन्दा नजर आने लगे।

— कम्पनियाँ लागत कम करने के लिये, कम से कम पैसों में ज्यादा से ज्यादा काम करवाने के लिये छँटनी, वर्क लोड में वृद्धि, वेतन- भत्तों में कटौती, आधी- चौथाई तनखा में कैजुअल वरंकर खुद रखना अथवा ठेकेदारों के जरिये मजदूर रखना, बाहर छोटी फैक्ट्रियों - वर्कशॉपों में काम करवाना , अप्रेन्टिसों से प्रोडक्शन करवाना आदि का सहारा लेती हैं । एक- दूसरे से हाथ मिला कर ही मजदूर इनकी काट कर सकते हैं । आपसी तालमेल द्वारा मैनेजमेन्टों में भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है का भय पैदा करके ही मजदूर छँटनी व वर्क लोड में वृद्धि पर लगाम लगा सकते हैं । फैक्ट्री में अगल- बगल में काम करते परमानेन्ट, कैजुअल, ठेकेदारों के वरकर और अप्रेन्टिस एक- दूसरे से ऐसे गुर सीख सकते हैं, एक- दूसरे को ऐसे गुर सिखा सकते हैं तथा तालमेल से इतने प्रकार के कदम उठा सकते हैं कि कैजुअल व ठेकेदार के वरकर रखना और अप्रेन्टिसों से उत्पादन लेना मैनेजमेन्टों को सस्ते की बजाय मँहगा पड़े । बड़ी फैक्ट्रियों के मजदूरों और छोटी फैक्ट्रियों - वर्कशॉपों के वरकरों के बीच चर्चायें तथा तालमेल इन कबाड़खानों - कबूतरखानों में करवाये जाते काम की लागत रिजेक्शन आदि के जरिये बहुत ज्यादा बढा सकते हैं ।

मजदूरों का एक- दूसरे से हाथ मिलाना छँटनी, वर्क लोड वृद्धि , कैजुअल व ठेकेदारी प्रथाओं तथा वर्कशॉपों के फैलने पर रोक तो लिये ही है, मजदूरों के बीच तालमेल बडी- छोटी फैक्ट्री, परमानेन्ट- कैजुअल- ठेकेदार के वरकर वाली मजदूरों के बीच की खाईयों को पाटना भी लिये है । इसलिये यह मजदूरी करने की जलालत से छुटकारे की राह भी है, नई समाज रचना की दिशा में एक कदम है । (जारी)

ड्युटी बाद दुकानदार : "ड्युटी से छूटने के बाद दुकान पर बैठता हूँ । रविवार को भी सारे दिन दुकान पर रहता हूँ । फैक्ट्री की तुलना में मैं यहाँ ज्यादा बन्धन में रहता हूँ हालाँकि अपनी दुकान है । यहाँ से जा नहीं सकता क्योंकि डर बना रहता है कि कोई ग्राहक लौट न जाये । देर तक दुकान खुली रखनी पड़ती है । बीवी- ब[illegible] - [illegible]दार भी दुकान में लगते हैं । धन्धे में लालच रहता है और नौकरी छो[illegible] तो [illegible] गुजारा नहीं होता ।"

विकल्पों के लिये प्रश्न (8)

सम्मोहन के शिकार

शिखरों के महिमागान । चोटियों पर पहुँचने की अभिलाषायें उत्पन्न करना । ऊँचे उठने , ऊपर चढने को प्रोत्साहित करना । ..... यह सब बहुत स्वाभाविक लग सकता है क्योंकि यह सीढीनुमा- पिरामिडनुमा- ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के अनुरूप है और वर्तमान ऐसी व्यवस्थाओं की पराकाष्ठा लगता है ।

जबकि उन्नीस- इक्कीस की भिन्नतायें — कोई किन्ही चीजों में उन्नीस तो किन्ही अन्य में इक्कीस वाली बात प्रकृतिजन्य लगती है। व्यक्तियों और व्यक्तित्वों में मामुली- मामुली फर्क सतरंगी तालमेलों वाली छटा लिये हैं , मनुष्यों के बीच गैर- बराबरी नहीं का आधार लिये हैं ।

पीड़ा की उपज है दर्शक व कलाकार

गैर- बराबरी वाली समाज व्यवस्थाओं में बेमतलब के , बोझिल , उबाऊ , नीरस , अत्यधिक तथा इन्सानों के लिये नुकसानदायक कामों का बोलबाला होता है । परिणामस्वरूप आबादी के अधिकांश भाग को काम करने को जबरन मजबूर किया जाता है । झूठ ,फरेब , तिकड़मबाजी , मारामारी छा जाती हैं । ऐसे में वास्तविकता से मुँह चुरा कर काल्पनिक लोक में विचरण करना एक अनिवार्यता बन जाती है। मनोरंजन , रोमांच, भक्ति , उत्तेजना की हवस उभरती हैं । दर्शक- श्रोता और कलाकार- अदाकार का जन्म होता है ।

सीढी के सिरे

उन्नीस- इक्कीस के प्रकृतिजन्य फर्कों को सीढी समान एक- दस- सौ- हजार- लाख के भेद बनाने का सिलसिला चलता है । ऊँच- नीच के लिये बाँधने और खींचने की पीड़ादायक प्रक्रिया कार्यरत रहती है ।

रोटी- कपड़ा- मकान की बेड़ियाँ अधिकांश लोगों को जकड़े रखती हैं । काम का बोझ और साधनों का अभाव आबादी के बड़े हिस्से को सीढी का , पिरामिड का निचला हिस्सा बनाता है । दर्शकों- श्रोताओं की श्रेणियों का यह मुख्य भाग बनता है ।

पुरुस्कार- प्रतिष्ठा का लालच दूसरों के सिर- माथों पर चढने को प्रेरित करता है। हर क्षेत्र- शाखा- प्रशाखा में प्रतियोगिता- दण्ड का भय स्वयं को लगातार तराशने को विवश करता है । क्षेत्र- विशेष में जन सामान्य व अपने बीच भेद को सौ से बढा कर हजार करना , लाख का करना पिरामिड में अपना स्थान निर्धारित करना है । बड़े- छोटे , सफल- असफल कलाकार का मापदण्ड है कि कौन कितनों के सिर पर बैठा है ।

एक तुच्छ , दूजा मानवद्रोही

बढती नफासत बढती तादाद में मनुष्यों को दर्शकों- श्रोताओं में तब्दील करती है । बड़े कलाकारों के सम्मुख दर्शकों में स्वयं को गौण , हेय , तुच्छ समझने के भाव पैदा होते हैं । हीनता के भाव व्यक्ति को स्वयं के प्रति हतोत्साहित करते हैं , निराश करते हैं । और, कलाकार- अदाकार को सफलता की सीढी चढने में आता आनन्द क्या है ? अधिकाधिक लोगों के सिर- माथों पर चढने में आता मानवद्रोही आनन्द !

विकल्पों के लिये बहस का मुद्दा यह नहीं है कि योग्यता, लगन , मेहनत , ईमानदारी से ऊपर पहुँची है अथवा जोड़- तोड़, तिकड़मबाजी , बेईमानी से ऊपर पहुँचा है । बल्कि , दर्शक / कलाकार विभाजन पर चर्चायें विकल्पों के लिये प्रस्थान- बिन्दु लगती हैं । (जारी)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ [illegible] ट[illegible] [illegible]र्स, बी—546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट ।